परिवार में गृहिणी का स्वरूप

आधुनिक युग में सभ्यता के विकास के साथ मानव की अनेक रुचियाँ और आवश्यकताएँ बढ़ गई हैं। फलस्वरूप परिवार के उत्तरदायित्वों में भी वृद्धि हो गई है। परिवार का उत्तरदायित्व केवल परिवार के सदस्यों तक ही सीमित नहीं है बल्कि समुदाय, समाज, राष्ट्र तथा विश्व के प्रति भी उनके कर्त्तव्य तथा उत्तरदायित्व हैं। वर्त्तमान गृहिणी को शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार के कार्य करने पड़ते हैं। वह परिवार में आयोजन, संगठनकर्त्री, प्रबंध-निर्देशिका, शिक्षिका, गृहनिर्मात्री एवं संयोजिका के रूप में अनेक उत्तरदायित्वों को निभाती है।

१. **आयोजिका**—आयोजिका के रूप में नारी का परिवार में महत्त्वपूर्ण स्थान है। विवेकपूर्ण ढंग से तैयार की गई उसकी योजना परिवार के सदस्यों को सुख-शांति प्रदान कर सकती है। जीवन में अनेक समस्याएँ आती हैं और घटनाएँ घटती रहती हैं, संघर्ष उत्पन्न होते रहते हैं। गृहिणी को उनसे जूझना, सबकी आवश्यकताओं एवं रुचियों का ध्यान रखते हुए उनका समाधान करना पड़ता है। सुचारु रूप से आयोजित करने की क्षमता से ही परिवार का कल्याण होता है तथा कम खर्च और कम समय में सभी समस्याओं का समाधान संभव है।

सुगृहिणी को भोजन वस्त्र और आवास की देखभाल तथा अन्य घरेलू व्यवस्था के अतिरिक्त इन बातों का भी ध्यान रखना पड़ता है—

१. पर्याप्त काम, उत्पादन का काम, आराम के लिए अवकाश और मनोरंजन का प्रबंध।

२. शिशु-पालन, बच्चों की शिक्षा और पठन-पाठन, उनकी आदतें और स्वास्थ्य को ठीक रखने का प्रबंध, मानसिक शक्तियों एवं रुचियों को दृष्टिगत रख कर भावी जीवन की दिशा के संबंध में योजनाएँ बनाना।

३. साधारण हिसाब-किताब, आय-व्यय आदि की योजना। वह घर की आय के साधनों का आयोजन अधिकाधिक संतोष एवं सुविधाएँ प्राप्त करने के उद्देश्य से करती है।

४. घर में होने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक उत्सवों और पर्वों का आयोजन करना तथा उसमें सक्रिय भाग लेना।

Scanned with CamScanner

५. रोगी-परिचर्या, अतिथियों के स्वागत सत्कार का आयोजन, उनकी सुविधा और उनके आराम का ध्यान रखना तथा मिलना-जुलना।

६. भोजन-व्यवस्था का आयोजन, परिवार के विभिन्न व्यक्तियों की शारीरिक विकास एवं स्वास्थ्य-संबंधी आवश्यकताओं तथा रुचियों को ध्यान में रख कर करना।

७. परिवार के सदस्यों के लिए आयु, मौसम, रुचि और आवश्यकता को ध्यान में रख कर वस्त्र की व्यवस्था करना गृहिणी का ही कार्य है।

८. परिवार के लोगों से यथायोग्य काम लेना, नौकर-दाई आदि से काम करवाना, सहयोग देना और लेना, आसपास के व्यक्तियों से मेल-जोल और आचार-व्यवहार आदि को निभाना।

९. गृहिणी को परिवार-नियोजन-संबंधी कार्य भी करना होता है। सीमित परिवार सुख और समृद्धि का प्रतीक होता है।

१०. योजना-संबंधी समस्त निर्णय परिवार के सदस्यों की सहायता से लिए जाते हैं।

एक सुगृहिणी अपने परिवार, पड़ोस, समाज, कुटुम्ब, संबंधी और देश के प्रति अपने कर्त्तव्य को भली-भाँति समझती है तथा तदनुसार व्यवस्था कर जीवन यापन करती है।

२. संगठक के रूप में—परिवार के लिए आयोजित व्यवस्था को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए विभिन्न क्रियाकलापों को संयोजित करना अत्यंत आवश्यक कार्य है। इस रूप में गृहिणी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति द्वारा उपलब्ध साधनों का उपयोग वह इस प्रकार करती है कि घर के रहन-सहन का स्तर शारीरिक और मानसिक संतोष प्रदान कर पर्याप्त रूप से समुन्नत हो सके। आय-व्यय को निर्धारित करते समय इस बात का ध्यान रहे कि सीमित आय से अधिकतम उपयोगिता और संतुष्टि प्राप्त की जा सके तथा अनिश्चित एवं आकस्मिक घटना के लिए कुछ बचत हो सके। कार्यों का संगठन तथा विभाजन इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक सदस्य को अपनी क्षमता और रुचि के अनुरूप कार्य मिलता रहे। गृहिणी मनोरंजनात्मक एवं शिक्षा-संबंधी विभिन्न क्रिया-कलापों का संगठन इस प्रकार करती है कि प्रत्येक सदस्य यथाशक्ति अपना योगदान कर अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सके।

३. प्रबंधिका के रूप में—घर की समुचित व्यवस्था का प्रबंध गृहिणी द्वारा होता है। केवल योजना बनाने से ही सफलता नहीं मिल सकती, प्रत्येक योजना को कार्यान्वित करना भी अनिवार्य है। परिवार के लिए स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन मौसम के अनुकूल उपयोगी वस्त्र एवं रहने का उचित प्रबंध कर घर का वातावरण

Scanned with CamScanner

आकर्षक और संतोषजनक बनाने का श्रेय गृहिणी पर ही निर्भर करता है। वह विभिन्न कार्यों के संपादन का प्रबंध इस प्रकार करती है कि समय और शक्ति बचाते हुए सभी कार्य विधिवत् रूप से संपन्न हो सकें।

उचित प्रबंध के द्वारा ही परिवार के सदस्यों में स्नेह एवं सहयोग प्राप्त होता है और घर में शांतिपूर्ण संतोषजनक वातावरण रहता है। इस प्रकार शारीरिक और मानसिक विकास को ध्यान में रखते हुए मनोरंजनात्मक, सामाजिक और धार्मिक आदि क्रिया-कलापों का प्रबंध गृहिणी की योग्यता पर निर्भर करता है।

४. **निर्देशिका के रूप में**—घर के कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए विवेकपूर्ण निर्देशन का होना अनिवार्य है। परिवार के निर्धारित स्तर के आधार पर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए गृहिणी स्वयं अपने को, नौकरों को, बच्चों को और आवश्यकता होने पर पति को भी निर्देशन करती है। निर्देशन जितना प्रभावपूर्ण होगा, कार्य उतना ही शीघ्रता और कुशलता से सपन्न होगा। गृहिणी को निर्देशन देते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

१. निर्देशन स्पष्ट, संक्षेप में, विनम्रता और मधुरतापूर्ण ढंग से दिया जाए।

२. एक बार निर्देशन देने के बाद उसमें बार-बार परिवर्त्तन नहीं करना चाहिए।

३. नौकरों को उचित और स्पष्ट निर्देशन देना चाहिए तथा निर्देशन का पालन भली-भाँति हो रहा है या नहीं इसकी ओर भी गृहिणी को सक्रिय रहना चाहिए ताकि नौकर काम को बिगाड़े नहीं।

४. बच्चों में अच्छी आदतों के निर्माण एवं शारीरिक और मानसिक विकास के लिए सतत् निर्देशन की आवयश्यकता होती है। बच्चों को निर्देशन इस प्रकार दिया जाए, जिससे उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव हो सके।

५. बच्चों का निर्देशन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सहानुभूति और स्नेहपूर्वक स्पष्ट विधि से देना चाहिए।

६. निर्देशन को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए गृहिणी को स्वयं अपने को निर्देशित करना चाहिए। निर्देशों का पालन ईमानदारी के साथ करना चाहिए, जिससे बच्चों पर नैतिक प्रभाव पड़े।

७. कभी-कभी पति में अकल्याणकारी आदतों, जैसे—मदिरापान, जुआ आदि के निर्मित हो जाने पर पति को निर्देशित करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए स्नेह के साथ प्रभावपूर्ण निर्देशन की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार कह सकते हैं, कि गृहिणी निर्देशिका के रूप में इस प्रकार आदेश दे कि निर्देशित व्यक्ति भली-भाँति समझ कर प्रसन्नतापूर्वक निर्देशों का कार्यान्वयन कर सके।

Scanned with CamScanner

५. **शिक्षिका एवं मार्ग-दर्शिका के रूप में**—बच्चों के व्यक्तित्व के विकास एवं उनकी शिक्षा-दीक्षा की प्रारंभिक पाठशाला घर ही है तथा प्रारंभिक शिक्षिका माता ही होती है। माता अपने आदर्श व्यक्तित्व तथा व्यवहार के माध्यम से बच्चों में अच्छी आदतें, आदर्श चरित्र, पारस्परिक व्यवहार एवं कुशलता-जैसे गुणों का समावेश करती है। बच्चों को धार्मिक तथा सामाजिक शिक्षा माँ के द्वारा ही पहले प्राप्त होती है। अतः, गृहिणी में शैक्षिक योग्यता होनी ही चाहिए, जिससे परिवार के सदस्यों का वह पथ-प्रदर्शन कर सके।

६. **गृह-निर्मात्री के रूप में**—गृहिणी घर के स्तर को उच्च बनाने तथा उसे समुन्नत करने का प्रयास करती है। गृह-निर्माण का संपूर्ण श्रेय गृहिणी को ही प्राप्त है। गृहिणी में उपलब्ध सामग्रियों की सहायता से कलात्मक ढंग से घर तथा वस्तु को आकर्षक एवं सुसज्जित करने की क्षमता होनी चाहिए। वस्तु का चयन तथा सजावट इस प्रकार हो कि सभी व्यक्तियों को अधिकतम आराम तथा सुविधाएँ प्राप्त हों। साज-सज्जा तथा सुव्यवस्था करते समय मौलिकता का ध्यान रखना चाहिए, ताकि स्वयं तथा परिवार के सदस्यों को आनन्द प्राप्त हो।

वस्त्र, भोजन तथा घर की व्यवस्था से गृहिणी की कलात्मकता का परिचय मिलता है। स्वयं अपने तथा परिवार के सदस्यों की आवश्यकता के अनुकूल मजबूत और आकर्षक वस्त्रों में सुधार, परिवर्त्तन आदि करके नया रूप देना गृहिणी का कार्य है। घर में संतोषजनक, व्यक्तिगत तथा पारिवारिक संबंध बनाए रखने का श्रेय गृहिणी को ही है।

७. **संयोजिका के रूप में**—गृहिणी का संयोजिका के रूप में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। उसके संयोजन से ही घर के समस्त कार्य, समस्त विचार स्वाभाविक रूप से एक क्रम से संपन्न होते रहते हैं। घर के विभिन्न सदस्यों तथा क्रियाकलापों के मध्य वह संयोजिका का महत्त्वपूर्ण कार्य करती है। उसके आचरण और व्यवहार-कुशलता के फलस्वरूप परिवार के समस्त सदस्यों के मध्य सुमधुर, स्नेहपूर्ण, पारस्परिक संबंध रहता है। उचित संयोजन से परिवार का प्रत्येक सदस्य सुरक्षा का अनुभव करता है।

परिवार का संपूर्ण उत्तरदायित्व गृहिणी पर ही निर्भर होता है। वह अन्य सदस्यों का सहयोग प्राप्त करती है। वह जितनी ही कुशलता एवं बुद्धिमत्तापूर्वक अपने बहुमुखी उत्तरदायित्वों को निभाती है, परिवार उतना ही सुदृढ़, प्रगतिशील एवं सुखी होता है।

Scanned with CamScanner